सूर्य और परमाल

बगदादके खलीफा वलीदकी सेनाने भारतमें सिन्ध प्रदेशके देवलराज्यपर आक्रमण किया। इस सेनाका सेनापति मुहम्मद बिन कासिम था। देवलके राजा दाहर और उनके पुत्र जयशाहने अपनी सेनाके साथ शत्रुका सामना किया। देवलराज्यकी सेनाके वीरोंने बड़ी बहादुरीसे युद्ध किया; लेकिन आक्रमण करनेवाली शत्रुसेना बहुत बड़ी थी। देवल-

राज्यकी पूरी सेना और राजा तथा राजकुमार भी युद्धमें मारे गये। वहाँकी महारानीने अपने पतिकी मृत्युका समाचार सुना तो वे स्त्रियोंकी सेना बनाकर राजमहलसे निकलीं और शत्रुओंपर टूट पड़ीं। महारानी और उनके साथकी वीर स्त्रियाँ युद्ध करते हुए मारी गयीं। मुहम्मद बिन कासिमने राजमहल लुटवा लिया। लूटके दूसरे सामानके साथ उसने राजा दाहर-का कटा सिर, राजाका छत्र और उनकी दोनों सूर्य और परमाल नामकी पुत्रियोंको बंदी बनाकर बगदाद भेज दिया। वह स्वयं पूरे भारतवर्षको जीतना चाहता था; इसलिये सिन्धमें ही रुक गया।

बगदादके खलीफाके पास जब राजा दाहरकी पुत्रियाँ पहुँचीं तो वह इनकी अद्भुत सुन्दरता देखकर अचम्भेमें आ गया. उसे लगा कि स्वर्गसे अप्सराएँ आ गयी हैं। उसने सूर्यकुमारीसे विवाहका प्रस्ताव किया। बेचारी राजकुमारियाँ विदेशमें शत्रुके राजमहलमें अकेली क्या कर सकती थीं। लेकिन उन्होंने अपने पिताको मारनेवालेसे बदला लेनेका निश्चय कर लिया था। जब खलीफाने सूर्यकुमारीसे विवाहका प्रस्ताव किया तो वह रोने लगी। उसे रोते देखकर खलीफा उसे चुप कराने उसकी ओर चला। सूर्यकुमारी पीछे हट गयी और बोली—'खलीफा! आप हमें छूना मत। आपके नीच सेनापति बिन कासिमने हमें अपवित्र कर दिया है।'

खलीफाने यह सुना तो वह क्रोधसे काँपने लगा। उसने

उस समय अपने दूत भारत भेजे और यह आज्ञा दी कि मुहम्मद बिन कासिमको जीते-जी सूखी खालमें सी दिया जाय और उसकी लाश मेरे सामने हाजिर की जाय। खलीफाके दूत भारत आये। मुहम्मद बिन कासिमने बहुत प्रयत्न किया कि वह जीवित खलीफाके पास पहुँचे और अपनेको निर्दोष बता सके; किंतु उसकी बात किसीने नहीं मानी। वह सूखी खालमें जीते-जी सी दिया गया।

सूखी खालके बोरेमें सीनेपर मुहम्मद बिन कासिम तो मर ही गया। उसकी लाश उस बोरेमें बगदाद पहुँचायी गयी। क्रोधमें आकर खलीफाने उसपर कई लातें लगायीं। इसके बाद खलीफा अपने महलकी छतपर गया। वहाँ उसने सूर्य और परमालको बुलाकर बताया कि मुहम्मद बिन कासिमकी लाश चमड़ेके बोरेमें सीकर नीचे दरबारमें पड़ी है।

सूर्यकुमारीने कहा—'ठीक है, हमने अपने पिताको मारने और अपने देशको लूटनेवालेसे बदला ले लिया।'

जब खलीफाको मालूम हुआ कि उसके सेनापतिका कोई दोष नहीं था, तब उसने अपना सिर पीट लिया। सूर्यकुमारीने अपनी छोटी बहिनको सब बातें पहले ही समझा दी थीं। दुःख और क्रोधसे पागल खलीफासे उसने कहा—'हम हिंदूकुमारियाँ हैं समझे! किसमें साहस है जो जीते-जी हमारे शरीरको हाथ लगा देगा।' इतना कहकर इन दोनों वीर बालिकाओंने महलकी छतके बिल्कुल किनारे खड़ी

होकर एक दूसरेकी छातीमें विषसे बुझी कटार जोरसे भोंक दीं और उनके प्राणहीन देह उस ऊँची छतसे नीचे लुढ़क गये।
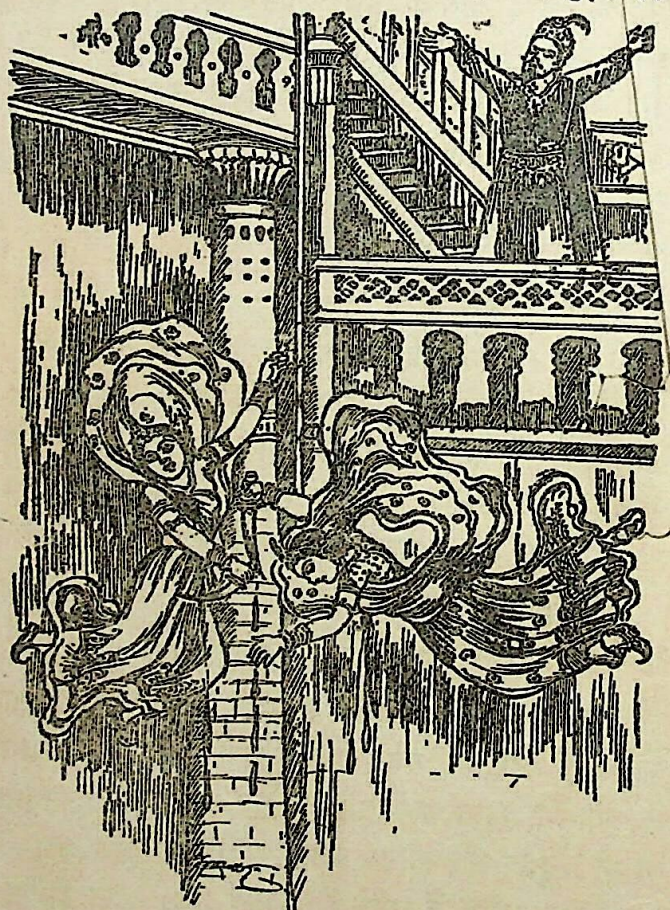
खलीफा भारतकी लड़कियोंकी यह आश्चर्यजनक वीरता देखकर ऐसा घबराया कि वहीं सिर पकड़कर बैठ गया।

सरदारबाई

गुजरातमें रानीपुर नामका एक छोटा-सा हिंदू-राज्य था। वहाँके राजा थे खेमराज। राजा खेमराजका पुत्र मूलराज नीच स्वभावका जुआरी और शराबी था, लेकिन राजाकी पुत्री सरदारबाई अत्यन्त सुन्दरी और बहादुर थी।

उस समय दिल्लीके बादशाहका सूबेदार रहमतखाँ शाही कर वसूल करने गुजरात आया था। यह विक्रमसंवत्की तेरहवीं शताब्दीकी बात है। रानीपुर राज्यमें नगरसे बाहर कोई उत्सव हो रहा था। नगरके सब पुरुष उत्सव देखने गये थे। ऐसे अवसरपर रहमतखाँ घोड़ेपर सवार होकर

दो-चार सिपाहियोंके साथ नगरमें घूम रहा था। उसी समय उसने राजकुमारी सरदारबाईको देख लिया और उसकी सुन्दरतापर मोहित हो गया।

रातके समय रहमतखाँने राजकुमार मूलराजको अपने डेरेमें बुलाकर शराब पिलायी। शराबके नशेमें राजकुमार मूलराज जुआ खेलने लगा। रहमतखाँके उकसानेपर उसने अपनी बहिनको दाँवपर लगाया और हार गया। दूसरे दिन सबेरा होते ही रहमतखाँने राजकुमारीको लेनेके लिये राजमहलके दरवाजेपर पालकी भेज दी। जब राजा खेमराजको इसका पता लगा तो उन्होंने पालकीको तुड़वाकर फेंकवा दिया और पालकी लानेवालोंको कैद कर लिया।

यह समाचार रहमतखाँको मिला। उसने मूलराजको आगे किया और वह गुप्त मार्गसे किलेमें पहुँच गया। राजपूत सैनिकों-को इसका पता नहीं था; लेकिन राजमहलकी स्त्रियोंने झटपट तलवारें सम्हाल लीं। विश्वासघाती राजकुमार मूलराजकी स्त्री उन सब स्त्रियोंके आगे थी। उसने मुसल्मानोंके आगे आते मूलराजको देखा तो सिंहिनीके समान टूट पड़ी और मूलराजकी छातीमें उसने तलवार घुसेड़ दी। इसके बाद उसने वही तलवार निकालकर अपनी छातीमें मारते हुए कहा—'मैंने अपने पतिके पापका प्रायश्चित्त कर दिया है। अब अपने पापका प्रायश्चित्त कर रही हूँ।'

इतनेमें वहाँ राजपूत सैनिक भी आ गये। बड़ा भयंकर

युद्ध हुआ। लेकिन थोड़ेसे राजपूत सैनिक शत्रुकी बड़ी भारी सेनासे जीत नहीं सके। राजा खेमराज, उनकी रानी और उनकी पुत्री सरदारबाईको रहमतखाँके सैनिकोंने पकड़ लिया। उनको साथ लेकर रहमतखाँ गुजरातकी राजधानी पाटनकी ओर चल पड़ा।

रास्तेमें ही रहमतखाँ एक दिन रातको सरदारबाईके डेरेमें गया। सरदारबाईने प्रसन्नमुखसे उसका स्वागत किया। रहमतखाँ जब सरदारबाईकी बातोंमें आ गया, तब सरदारबाईने शराब मँगवायी और अपने हाथों वह रहमतखाँ-को पिलाने लगी। सरदारबाईने इतनी शराब पिलायी कि रहमतखाँ बेहोश हो गया। उस वीर राजपूतकन्याने बेहोश रहमतखाँको पैरसे ठोकर मारकर पलँगसे नीचे लुढ़का दिया। वह डेरेसे बाहर निकली। सभी पहरेदार शराब पीये पड़े थे। उसने एक सिपाहीका कपड़ा उतारकर पहिन लिया और अँधेरी रातमें घोड़ेपर चढ़कर वहाँसे चली गयी।

रहमतखाँको जब होश आया तो उसने देखा कि वहाँ सरदारबाईके कपड़े पड़े हैं और एक सिपाही नंगा पड़ा है। वह सरदारबाईके भागनेकी बात समझ गया। चारों ओर घुड़सवार दौड़ाये गये; पर सरदारबाई अब कहाँ मिलनेवाली थी। रहमतखाँने सरदारबाईके पिता राजा खेमराज और उनकी रानीको धमकाकर मुसल्मान हो जानेको कहा; किंतु सच्चे हिंदू प्राणके भयसे धर्म नहीं छोड़ा

करते। जब राजा और रानीने हिंदूधर्म छोड़ना स्वीकार नहीं

किया तो रहमतखाँने उनको मरवा दिया। सरदारबाईके भाग जानेका यह बदला लेकर उसे संतोष करना पड़ा।

लालबाई

आहोरके राजा पर्वतसिंहके पास सिन्धके बादशाह अहमदशाहने संदेश भेजा कि वे अपनी लड़की लालबाईका विवाह बादशाहसे कर दें। बादशाहके दूतके द्वारा यह संदेश पाकर राजा पर्वतसिंह और उनके दरबारके राजपूत सरदार क्रोधसे लाल हो उठे। बादशाहका दूत निराश होकर लौट गया। आहोर एक छोटा-सा राज्य था। अहमदशाह समझता था कि आहोरका राजा डर जायगा। जब उसका दूत निराश होकर लौट आया तो बड़ी भारी सेना लेकर उसने आहोरपर चढ़ाई कर दी। उसकी सेनाने आहोरके किलेको चारों ओरसे घेर लिया।

राजपूत सैनिकोंकी संख्या बहुत थोड़ी थी। यद्यपि उनकी वीरताके सामने अहमदशाहका साहस किलेपर आक्रमण करनेका नहीं हुआ; किंतु वह बहुत दिनोंतक किलेको घेरे पड़ा रहा। अन्तमें किलेमें अन्न समाप्त हो गया। राजा पर्वतसिंह और उनके सैनिकोंने भूखों मरनेके बदले शत्रुसे लड़कर मरनेका निश्चय किया। किलेमें जितनी स्त्रियाँ थीं,

सबने जौहर-व्रतकी तैयारी कर ली। बड़ी भारी चिता किलेमें बनायी गयी। सती राजपूत-स्त्रियाँ हँसती-हँसती उस धधकती चितामें कूद पड़ीं। पुरुषोंने केसरिया कपड़े पहिने, गलेमें तुलसीकी माला डाली और शालिग्राम बाँधे और एक-दूसरेसे गले मिले। फिर किलेका फाटक खोल दिया गया। सभी राजपूत तलवारें खींचकर शत्रुओंपर टूट पड़े और लड़ते हुए मारे गये। राजा पर्वतसिंह, उनके पुत्र और सभी साथी खेत रह गये।

अहमदशाह जब युद्ध जीतकर आहोरके किलेमें घुसा तो पूरा किला चिताके धुएँसे भरा था। उसमें कोई जीवित मनुष्य नहीं था। अहमदशाह तो सिर पकड़कर बैठ ही गया, लेकिन पीछे पता लगानेपर उसे यह बात मालूम हो गयी कि पर्वतसिंहने अपनी पुत्री लालबाईको गुप्तरूपसे अपने एक विश्वासी सरदारके यहाँ भेज दिया है। अहमदशाहने उस सरदारके पास दूत भेज दिया लालबाईको सौंप देनेके लिये।

लालबाईको अपने पिता और भाईके मारे जानेका पता पहले ही लग गया था। उसने खाना-पीना छोड़ दिया था। जब उस सरदारके यहाँ अहमदशाहका दूत पहुँचा तो लालबाईने सरदारको बुलाकर कहा—'चाचाजी! आप मेरे लिये संकटमें न पड़ें। मैं अहमदशाहके पास जाना चाहती हूँ।'

सरदारने कहा—'बेटी! तू चिन्ता मत कर। हम सब

भी राजपूत हैं। हमारे जीते-जी कोई तेरी ओर आँख उठाकर देख नहीं सकता।'

लेकिन लालबाईने तो पक्का निश्चय कर लिया था अपने पिताको मारनेवालेके पास जानेकी। उसकी हठ सबको विचित्र लगती थी, पर कोई उपाय तो था नहीं। अहमदशाह तो यह समाचार पाकर फूला नहीं समाता था। विवाहका दिन निश्चित हो गया। चाँदी झीलके पासके शाही महलमें विवाह-की तैयारी हुई। उस समयकी प्रथा थी कि लड़कीके लिये लड़का और लड़केके लिये लड़कीके यहाँसे विवाहके कपड़े आते थे। लालबाईके भेजे कपड़े पहिनकर अहमदशाह विवाह-मण्डपमें आया और लालबाईने भी अहमदशाहके भेजे कपड़े पहिन रक्खे थे। बहुत-से मौलवी और पण्डित विवाह करानेके लिये बुलाये गये थे। लेकिन बाहर जनताकी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी और वह बादशाह और उनकी नयी बेगमको देखनेके लिये हल्ला मचा रही थी। जनताको संतुष्ट करनेके लिये अहमदशाह लालबाईके साथ राजमहलके कँगूरेपर गया। लेकिन वहाँ पहुँचते-पहुँचते तो अहमदशाहके दाहिने कंधेसे आगकी लपटें निकलने लगीं। लालबाईने बड़े तीक्ष्ण विषमें सने कपड़े भेजे थे। जबतक कोई इस बातको समझे कि लालबाईने अपने पिताका बदला लेनेके लिये यह चाल चली है, लालबाई कँगूरेपरसे चाँदी झीलमें कूद पड़ी। अहमदशाह विषकी ज्वालासे पागलोंके समान इधर-से-उधर भागा और
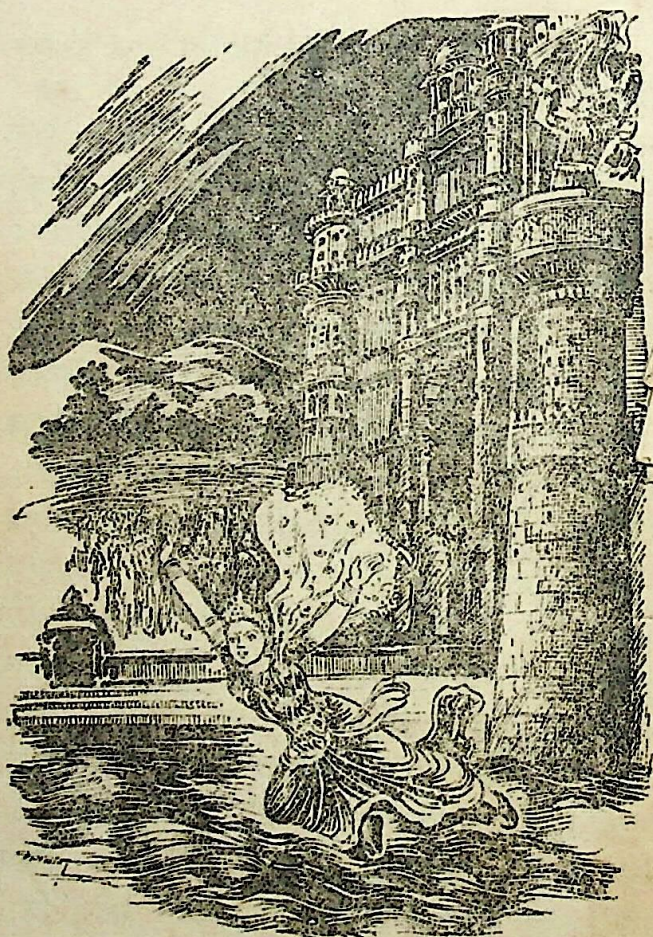
तड़प-तड़पकर मर गया। आहोरके सरदार समझ गये कि लालबाईने बदला लेनेके लिये ही यह विवाहका खेल रचाया था।

ताजकुँवरि

कानपुरके पास किसोरा नामका एक हिन्दू राज्य था। उसके राजाका नाम था सज्जनसिंह। उनके एक पुत्र और एक पुत्री थी। राजकुमारका नाम लक्ष्मणसिंह और राजकुमारीका नाम ताजकुँवरि था। राजा सज्जनसिंहने अपनी पुत्रीको भी पुत्रके समान ही घोड़ेपर चढ़ने और तलवार, भाला आदि चलानेकी शिक्षा दी थी।

उस समय दिल्लीका बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक था। देशमें मुसलमानोंका जोर था। ये लोग कहीं भी बिना कारण ही हिन्दुओंपर आक्रमण कर देते थे। एक बार राजकुमार लक्ष्मणसिंह और राजकुमारी ताजकुँवरि घोड़ोंपर चढ़कर शिकार खेलने निकले। वनमें बारह-चौदह मुसलमान एक झाड़ीमें छिपे कुछ सलाह कर रहे थे। जब उन लोगोंने देखा कि एक लड़का और एक लड़की घोड़ेपर बैठे जा रहे हैं और उनके साथ सैनिक नहीं हैं, तो वे लोग लाठियाँ लेकर दोनोंपर टूट पड़े। लक्ष्मणसिंह और ताजकुँवरिने भी अपनी तलवारें खींच लीं और वे दोनों उन लोगोंका सामना करने लगे। लक्ष्मणसिंहने थोड़ी देरमें पाँच आक्रमणकारियोंके सिर काट फेंके। ताजकुँवरिने उस समयतक तीनको मार दिया था, किंतु वह भाईसे पीछे नहीं रहना चाहती थी, उसने बड़ी शीघ्रतासे तलवार चलाकर दो शत्रुओंको और मार दिया। दसके मारे जानेपर जो आक्रमणकारी बचे, वे भाग गये।

वे भागे हुए पठान दिल्ली पहुँचे। उन लोगोंने कुतुबुद्दीनको जाकर उभाड़ा कि ताजकुँवरि बहुत सुन्दर है। उसे बादशाह अपनी बेगम बना लें। कुतुबुद्दीनने उन लोगोंकी बात मान ली। दिल्लीकी मुसल्मानी सेनाने किसोराका किला घेर लिया। उस छोटे-से राज्यके थोड़े-से राजपूत सैनिक किलेसे बाहर निकले और शत्रुओंपर टूट पड़े।

किलेके कँगूरेपरसे राजकुमार और राजकुमारी युद्ध देख रहे थे। उन्होंने देखा कि बहुत बड़ी मुसल्मानी सेनाके सामने राजपूत वीर एक-एक करके मारे जा रहे हैं। किसोरा-की सेना घटती चली जा रही है। भाई-बहिनने सलाह की और वीर-वेषमें घोड़ेपर चढ़कर तलवारें खींचे युद्धके लिये चल पड़े। युद्धमें उन दोनोंकी तलवारें शत्रुओंको मूलीकी भाँति काटने लगीं।

बादशाह कुतुबुद्दीन दूरबीन लगाये दूरसे युद्ध देख रहा था। उसने ताजकुँवरिको युद्ध करते देखा तो अपने सिपाहियोंसे चिल्लाकर बोला—'जो कोई उस लड़कीको जीवित पकड़कर मेरे पास ले आयेगा, उसे मुँहमाँगा इनाम दिया जायगा।'

बादशाहकी घोषणा सुनकर अनगिनत मुसल्मान सैनिक इनामके लोभमें राजपूतोंपर टूट पड़े। राजा सज्जनसिंह और उनके साथी राजपूत सैनिक युद्धमें मारे गये। जब ताजकुँवरिने देखा कि मुसल्मान सैनिक उसके पास आते जा रहे हैं तो उसने लक्ष्मणसिंहसे कहा—'भैया! अपनी बहिनको बचाओ।'

लक्ष्मणसिंहकी आँखोंमें आँसू आ गये। उन्होंने कहा—'बहिन! अब तुम्हें बचानेका क्या उपाय मेरे पास है?'

ताजकुँवरिने भाईको ललकारा—'राजपूत होकर रोते हो भैया! अरे, मेरा शरीर तो कभी-न-कभी मरेगा ही, तुम मेरे धर्मको बचाओ। मुसल्मानोंके अपवित्र हाथ तुम्हारी बहिनको छूने न पावें।'

लक्ष्मणसिंहकी समझमें बात आ गयी। उसने तलवारके एक झटकेसे ताजकुँवरिका सिर शरीरसे अलग कर दिया। इसके बाद वह शत्रुओंपर साक्षात् यमराजके समान टूट पड़ा। कितने शत्रुके सैनिकोंको मारकर वह गिरा, इसकी कुछ गिनती नहीं। कुतुबुद्दीन विजयी तो हुआ, पर विजयमें उसे मिलीं लाशें और किसोराका सूना किला।

वीरमती

देवगिरि नामका एक छोटा-सा राज्य था। चौदहवीं शताब्दीमें वहाँके राजा रामदेवपर अलाउद्दीनने चढ़ाई की। उसने राजा रामदेवके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये संदेश भेजा, किंतु सच्चे राजपूत पराधीन होनेके बदले युद्धमें हँसते-हँसते मर जाना अधिक उत्तम मानते हैं। राजा रामदेवने अलाउद्दीनको बहुत कड़ा उत्तर दिया। क्रोधमें भरा अलाउद्दीन सेनाके साथ देवगिरिपर चढ़ आया। लेकिन देवगिरिके राजपूत सैनिकोंकी शक्तिके सामने उसकी बड़ी भारी सेना टिक नहीं सकी। अलाउद्दीनके बहुत-से सैनिक मारे गये। हारकर वह पीछे लौट पड़ा। देवगिरिमें विजयका उत्सव मनाया जाने लगा।

राजा रामदेवकी सेनाका एक मराठा सरदार किसी पिछले युद्धमें मारा गया था। उस सरदारकी एकमात्र कन्या वीरमतीको राजाने अपनी पुत्रीके समान पाला-पोसा था और जब वह चौदह-पंद्रह वर्षकी हुई तो अपनी सेनाके कृष्णराव नामके एक मराठा युवकसे उसकी सगाई कर दी गयी। यह कृष्णराव बड़ा लोभी था। जब अलाउद्दीन हारकर लौट रहा था, तब कृष्णरावने उसे देवगिरि किलेका भेद इस लोभसे बता दिया कि विजयी होनेपर अलाउद्दीन उसे देवगिरिका राजा बना देगा। देवगिरिके किलेका भेद और

वहाँकी सेनाकी शक्तिका पता पाकर अलाउद्दीन फिर सेनाके साथ लौट पड़ा।

देवगिरि राज्यमें विजयका उत्सव मनाया जा रहा था कि अलाउद्दीनके लौटनेका समाचार मिला। राजा रामदेवने कहा—अवश्य किसीने हमलोगोंके साथ विश्वासघात किया है। बिना कोई विशेष सूचना मिले हारा हुआ शत्रु फिर लौट नहीं सकता था। लेकिन चिन्ताकी कोई बात नहीं। हम निश्चय ही शत्रुको फिर हरा देंगे।'

'हम अवश्य विजयी होंगे।' सभी राजपूत सरदारोंने तलवारें खींचते हुए कहा। लेकिन कृष्णराव चुप रह गया। सब लोग उसकी ओर देखने लगे और उसके चुप रहनेका कारण पूछने लगे।

'यह देशद्रोही है!' वीरमतीने इतनेमें ही सिंहिनीके समान गरजकर कृष्णरावकी छातीमें तलवार घुसेड़ दी। कृष्णरावने वीरमतीसे पहले कुछ ऐसी बात कही थी, जिससे वीरमतीको उसपर संदेह हो गया था।

मरते-मरते कृष्णराव बोला—'मैं सचमुच देशद्रोही हूँ, लेकिन वीरमती! तुम्हारा···।'

वीरमती बीचमें ही बोली—'मैं जानती हूँ कि मेरा तुमसे विवाह होनेवाला था। मनसे मैंने तुम्हें पति मान लिया था। हिंदू-कन्या एकको पति बनाकर फिर दूसरे पुरुषकी बात भी नहीं सोच सकती। मैंने देशद्रोहीको

मारकर अपने देशके प्रति मेरा जो कर्तव्य था उसे पूरा कर दिया है। अब मैं अपने सतीधर्मका पालन करूँगी।' इतना

कहकर उसने अपनी छातीमें वही तलवार मार ली और कृष्णरावके पास ही वह भी गिर पड़ी।

रत्नावती

जैसलमेर-नरेश महारावल रत्नसिंह अपने किलेसे बाहर राज्यके शत्रुओंका दमन करने गये थे। जैसलमेर-किलेकी रक्षा उन्होंने अपनी पुत्री रत्नावतीको सौंप दी थी। इसी समय दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनकी सेनाने जैसलमेरको घेर लिया। इस सेनाका सेनापति मलिक काफूर था। किलेके चारों ओर बड़ी भारी मुसल्मानी सेना पड़ाव डालकर पड़ गयी, लेकिन इससे रत्नावती घबरायी नहीं। वह वीर सैनिकका वेश पहिने, तलवार बाँधे, धनुष-बाण चढ़ाये घोड़ेपर बैठी किलेकी बुर्जोंपर और दूसरे सब आवश्यक स्थानोंपर घूमती और सेनाका संचालन करती थी। उसकी चतुरता और फुर्तीके कारण मुसल्मान सेनाने जब-जब किलेपर आक्रमण करना चाहा, उसे अपने बहुत-से वीर खोकर पीछे हट जाना पड़ा।

जब अलाउद्दीनके सैनिकोंने देखा कि किलेको तोड़ा नहीं जा सकता, तब एक दिन बहुत-से सैनिक किलेकी दीवारोंपर चढ़ने लगे। रत्नावतीने पहले तो अपने रक्षक सैनिक हटा लिये और उन्हें चढ़ने दिया, पर जब वे दीवारपर ऊपरतक चढ़ आये तब उसने उनके ऊपर पत्थर बरसाने और गरम तेल डालनेकी आज्ञा दे दी, इससे शत्रुका वह पूरा दल नष्ट हो गया।

एक बार एक मुसलमान सैनिक छिपकर रातमें किलेपर
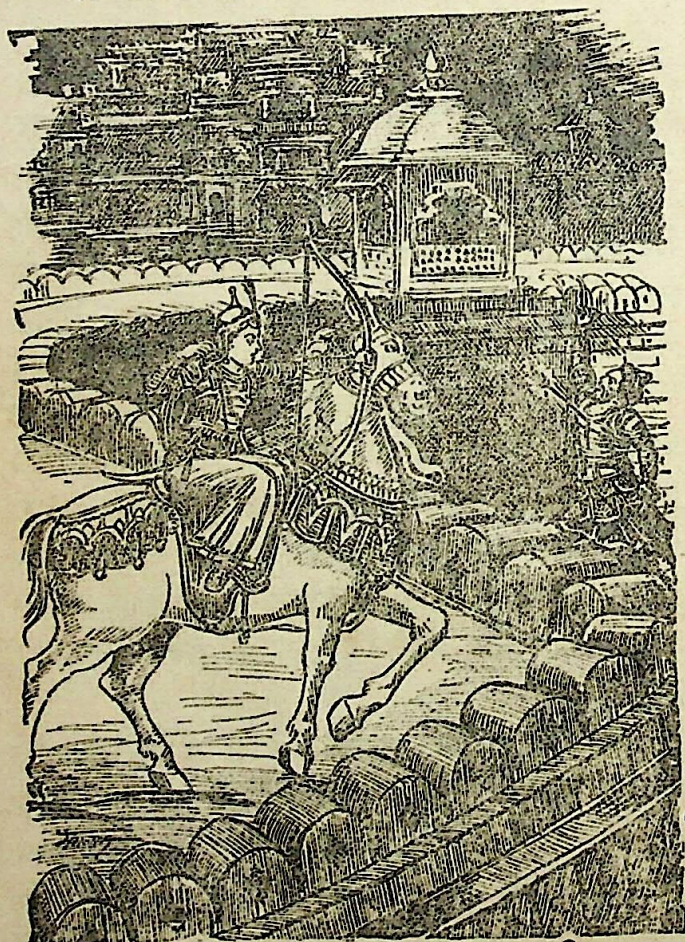
चढ़ने लगा; लेकिन रत्नावती इतनी सावधान रहती थी कि उसने उस सैनिकको देख लिया। उस मुसलमानने पहले

तो यह कहकर धोखा देना चाहा कि 'मैं तुम्हारे पिताका संदेश लाया हूँ।' किंतु राजकुमारी रत्नावतीको धोखा देना सरल नहीं था। उसने उस शत्रुके सैनिकको बाणसे बींध दिया।

सेनापति मलिक काफ़ूरने देखा कि वीरतासे जैसलमेरका किला जीतना कठिन है। उसने बूढ़े द्वारपालको सोनेकी ईटें दीं कि वह रातको किलेका फाटक खोल दे। लेकिन सच्चे राजपूत लोभमें आकर विश्वासघात नहीं करते। द्वारपालने रत्नावतीको यह बात बतला दी। रत्नावतीने भी देखा कि शत्रुको पकड़नेका अच्छा अवसर है। उसने द्वारपालको रातमें किलेका दरवाजा खोल देनेको कह दिया।

आधी रातको सौ सैनिकोंके साथ मलिक काफ़ूर किलेके फाटकपर आया। बूढ़े द्वारपालने फाटक खोल दिया। वे लोग भीतर आ गये तो फाटक बंद करके वह उन्हें रास्ता दिखाता आगे ले चला। थोड़ी दूर जाकर बूढ़ा किसी गुप्त रास्तेसे चला गया। मलिक काफूर और उसके साथी हैरान रह गये। किलेकी बुर्जपर खड़ी होकर राजकुमारी रत्नावती हँस रही थी। वे लोग अब समझ गये थे कि यहाँ आकर वे अब वापस भी लौट नहीं सकते। उन्हें किलेकी कैदमें बंद होना पड़ा।

सेनापतिके पकड़े जानेपर भी मुसलमान सेनाने किलेको

घेरे रखा। किलेके भीतर जो अन्न था वह समाप्त होने लगा। राजपूत सैनिक उपवास करने लगे। रत्नावती भूखसे दुबली और पीली पड़ गयी। लेकिन ऐसे संकटमें भी उसने राजाके न्याय-धर्मको नहीं छोड़ा। अपने यहाँ जेलमें पड़े शत्रुको पीड़ा नहीं देनी चाहिये, यह अच्छे राजाका धर्म है। रत्नावती अपने सैनिकोंको रोज एक मुट्ठी अन्न देती थी; किंतु मलिक काफूर और उसके साथियोंको दो मुट्ठी अन्न रोज दिया जाता था।

अलाउद्दीनको जब पता लगा कि जैसलमेरके किलेमें उसका सेनापति कैद है और किला जीता जाय इसकी आशा नहीं है, तो उसने महारावल रत्नसिंहजीके पास सन्धि-का प्रस्ताव भेज दिया। रत्नावतीने देखा कि एक दिन किलेके चारों ओरकी मुसल्मान सेनाएँ अपना तम्बू-डेरा उखाड़ रही हैं और उसके पिता अपने सैनिकोंके साथ चले आ रहे हैं।

मलिक काफूर जब किलेकी जेलसे छोड़ा गया तो उसने कहा—'राजकुमारी साधारण लड़की नहीं हैं। वे वीर तो हैं ही, देवी हैं। उन्होंने खुद भूखी रहकर हमलोगोंका पालन किया है। वे तो पूजा करने योग्य हैं।'

विद्युल्लता

बात उस समयकी है, जब अलाउद्दीनने चित्तौड़की महारानी पद्मिनीको पानेके लिये चित्तौड़पर दूसरी बार बहुत बड़ी सेनाके साथ आक्रमण किया था। पहली बार वह पराजित होकर लौट गया। इस दूसरी बारका उसका आक्रमण बड़ी भारी तैयारीसे हुआ था। अन्तमें इसी आक्रमणमें चित्तौड़के वीर राजपूत केसरिया वस्त्र पहनकर युद्धमें मारे गये और महारानी पद्मिनी तथा दूसरी राजपूत स्त्रियाँ चिता बनाकर उसमें अपने सतीत्वकी रक्षाके लिये जीवित ही जल गयी थीं।

चित्तौड़के एक सरदारकी कन्याका नाम विद्युल्लता था। उसकी सगाई समरसिंह नामके एक राजपूत सरदारसे हुई थी। दोनोंके विवाहकी तैयारी हो ही

रही थी कि चित्तौड़पर अलाउद्दीनने आक्रमण कर दिया। समरसिंहको अपने देशकी रक्षाके लिये युद्धमें जाना पड़ा। विद्युल्लता उन दिनों प्रायः एकान्तमें रहती और अपने भावी पतिका चिन्तन किया करती थी।

एक दिन चाँदनी रातमें समरसिंह विद्युल्लताके घर आया और अकेलेमें उससे मिलकर बोला—'मुझे तो ऐसा लगता है कि अब थोड़े दिनोंमें ही चित्तौड़ मुसल्मानोंके हाथमें चला जायगा। मुसल्मान सैनिक बहुत अधिक हैं, इसलिये राजपूतोंको अन्तमें हारना ही पड़ेगा। ऐसी अवस्थामें मैं चाहता हूँ कि हम-तुम चित्तौड़से कहीं दूर भाग चलें।'

पहले तो विद्युल्लताकी समझमें ही बात नहीं आयी कि समरसिंह ऐसी बात क्यों कहता है, किंतु जब समरसिंहने बताया कि वह विद्युल्लताके मोहके कारण ही युद्धसे भागकर आया है, तब विद्युल्लता गरज उठी—'तुम क्या सोचते हो कि तुम्हारे-जैसे कायरसे मैं विवाह कर लूँगी ? कोई राजपूत-कुमारी किसी युद्धसे भागनेवाले कायरपर थूकना भी नहीं चाहेगी। तुम्हें मेरा हाथ पकड़ना है तो युद्धमें जाकर अपनी वीरता दिखलाओ। युद्धमें तुम मारे गये तो सती होकर स्वर्गमें मैं तुमसे मिलूँगी।'

विद्युल्लता समरसिंहको फटकारकर अपने घर

चली गयी । समरसिंह निराश होकर लौट पड़ा। वह अलाउद्दीनकी सेनाको देखकर डर गया था। विद्युल्लताकी सुन्दरतापर वह मोहित हो गया था और इसीलिये मरनेसे उसे डर लगता था। उसने समझ लिया कि युद्ध समाप्त होनेपर ही विद्युल्लता उसे मिल सकती है । मोहके वश होकर वह शत्रुओंसे मिल गया। जब अलाउद्दीनने चित्तौड़ जीत लिया तो सैकड़ों मुसल्मान सैनिकोंके साथ समरसिंह विद्युल्लतासे मिलने चला।

विद्युल्लताने जब समरसिंहको आते देखा तो हैरान रह गयी। मुसल्मान सैनिकोंके साथ उसे आते देखकर वह समझ गयी कि समरसिंह देशद्रोही है। पास पहुँचकर समरसिंहने विद्युल्लताका हाथ पकड़ना चाहा; किंतु वह पीछे हट गयी और डाँटकर बोली—'तू अधम देशद्रोही है। मेरे शरीरको छूकर मुझे अपवित्र मत कर। शत्रुओंसे मिलकर मेरे पास आते तुझे लज्जा नहीं आयी ? जा, कहीं दो चुल्लू पानीमें डूब मर। विश्वासघाती कायरोंके लिये यहाँ स्थान नहीं है।'

समरसिंह विजयके घमंडमें था। वह विद्युल्लताको पकड़ने आगे बढ़ा, लेकिन विद्युल्लताने झटसे अपनी कटार खींच ली और अपनी छातीपर दे मारी। समरसिंह उसे पकड़ सके इसके पहिले तो वह पवित्र राजपूत-बालिका शरीर छोड़कर देवताओंके दिव्यलोकमें चली गयी थी।

समरसिंहके हाथ लगा केवल उसका प्राणहीन शरीर

और देशसे विश्वासघात करनेका कलङ्क ।

मेवाड़के महाराजा भीमसिंहकी पुत्री कृष्णा अत्यन्त सुन्दरी थी । उससे विवाह करनेके लिये अनेक वीर राजपूत उत्सुक थे । जयपुर और जोधपुरके नरेशोंने उससे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की थी । मेवाड़के महाराणाने सब बातोंको विचार करके जोधपुर-नरेशके यहाँ अपनी पुत्रीकी सगाई भेजी ।

जब जयपुरके नरेशको इस बातका पता लगा कि मेवाड़के महाराणाने मेरी प्रार्थना अस्वीकार कर दी और अपनी पुत्रीका विवाह जोधपुर कर रहे हैं तो उन्होंने इसे अपना अपमान समझा। वे चित्तौड़पर चढ़ाई करनेकी तैयारी करने लगे।

जोधपुर-नरेश इस बातको कैसे सह सकते थे कि उनके सगाई करनेके कारण कोई चित्तौड़पर आक्रमण करे। फल यह हुआ कि पहिले जयपुर और जोधपुरके नरेशोंमें ही ठन गयी। दोनों ओरके राजपूत सैनिक युद्ध करने लगे। भाग्य जयपुर-नरेशके पक्षमें था। जोधपुरकी सेना हार गयी, जयपुर-नरेश विजयी हो गये! अब उन्होंने मेवाड़-नरेशके पास संदेश भेजा कि अपनी पुत्री कृष्णाका विवाह वे उनसे कर दें।

मेवाड़के महाराणाने उत्तर दिया—'मेरी पुत्री कोई भेड़-बकरी नहीं है कि [illegible] चलानेवालोंमें जो जीते वही उसे हाँक ले जाय। मैं [illegible]बुरेका विचार करके ही उसका विवाह करूँगा।'

जब जयपुर यह समाचार पहुँचा तो वहाँकी सेनाने कूच कर दिया। जयपुर-नरेशने मेवाड़के पास पड़ाव डाल दिया और महाराणाको धमकी दी—'कृष्णा अब मेवाड़में नहीं रह सकती। या तो उसे मेरी रानी होकर जयपुर चलना होगा या मेरे सामनेसे उसकी लाश ही निकलेगी।'

महाराणा भीमसिंह बड़ी चिन्तामें पड़ गये । मेवाड़की छोटी-सी सेना जयपुर-नरेशका युद्धमें सामना नहीं कर सकती थी । इस प्रकारकी धमकीपर पुत्रीको दे देना तो देशके लिये पराजयसे भी बड़ा अपमान था । अन्तमें उन्होंने जयपुर-नरेशकी बात पकड़ ली—'कृष्णाकी लाश ही निकलेगी ।'

चित्तौड़के सम्मानकी रक्षाका एक ही उपाय था—कृष्णाकी मृत्यु । उस सुन्दर सुकुमारी राजकुमारीको मारेगा कौन ? महाराणाकी आँखें रोते-रोते लाल हो गयी थीं । महारानीके दुःखका कोई पार नहीं था; लेकिन कृष्णाने यह सब सुना तो वह ऐसी प्रसन्न हुई, जैसे उसे कोई बहुत बड़ा उपहार मिल गया हो । उसने कहा—'माँ ! तुम क्षत्राणी होकर रोती हो ? अपने देशके सम्मानके लिये मर जानेसे अच्छी बात मेरे लिये और क्या हो सकती है ? माँ ! तुम्हीं तो बार-बार मुझसे कहा करती थीं कि देशके लिये मर जानेवाला धन्य है । देवता भी उसकी पूजा करते हैं ।'

अपने पिता महाराणासे उस वीर बालिकाने कहा—'पिताजी ! आप राजपूत हैं, पुरुष हैं और फिर भी रोते हैं ? चित्तौड़के सम्मानकी रक्षाके लिये तो मैं सौ-सौ जन्म लेकर बार-बार मरनेको तैयार हूँ । मुझे एक प्याला विष दे दीजिये ।'

कृष्णाको विषका प्याला दिया गया । उसने कहा—'भगवान् एकलिङ्गकी जय !' और गटागट पी गयी ।

जब कृष्णाकी लाश निकली, उस देशपर बलिदान होनेवाली बालिकाके लिये जयपुर-नरेशने भी हाथ जोड़कर सिर झुका दिया। उनकी आँखोंसे भी आँसू टपकने लगे।

चम्पा

बड़े-बड़े राजपूत राजाओंने अकबरके सामने सिर झुका दिया था और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी; किंतु महाराणा प्रताप ही ऐसे थे जो अकबरके आगे कभी झुके नहीं। उन्होंने बड़े-बड़े कष्ट उठाये, किंतु हिंदूकुलके गौरवको सुरक्षित रखा। इन्हीं हिंदू-कुल-सूर्य महाराणा प्रतापकी प्यारी पुत्रीका नाम चम्पा था।

अकबरकी सेनाने चित्तौड़पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली पर्वतकी घाटियों, गुफाओं और वनोंमें अपने परिवारके साथ भटकते फिर रहे थे। महारानी और राजकुलके सुकुमार बालक, पता नहीं कितना कष्ट उठा रहे थे। लेकिन अपने धर्म और देशकी स्वतन्त्रता तथा गौरवके लिये महाराणाने पूरे पचीस वर्ष यह अपार कष्ट उठाया।

इस कठिन समयमें महाराणाको बच्चोंके साथ दिन-दिनभर पैदल घूमना पड़ता था। रातको भूमिपर या चट्टानोंपर वे सोते थे। बहुधा बच्चोंको उपवास करना पड़ता था। तीन-तीन चार-चार दिनोंपर कहीं जंगली बेर और घासकी रोटियाँ मिल पाती थीं। कई बार ऐसा अवसर आता था कि वे घासकी रोटियाँ भी बनाते-बनाते छोड़कर भागनेको विवश हो जाते थे।

महाराणा प्रतापकी पुत्री चम्पा ग्यारह वर्षकी थी और

एक पुत्र था महाराणाके जो उस समय चार वर्षका था। एक दिन दोनों बालक एक नदीके किनारे खेल रहे थे। छोटे कुमारको भूख लगी थी। वह रोटी माँगने लगा और रोने लगा। उस चार वर्षके बच्चेको क्या पता कि उसके पिता-माताके पास आज अपने युवराजके लिये रोटीका एक टुकड़ा भी नहीं है। चम्पाने अपने छोटे भाईको कहानी सुनाकर फूलोंकी माला पहिनाकर बहला दिया। राजकुमार भूखा ही सो गया।

चम्पा जब छोटे भाईको गोदमें लेकर माताके पास सुलाने आयी तो देखा कि महाराणा चिन्तामें डूबे बैठे हैं। उसने पूछा—'पिताजी! आप चिन्तित क्यों हैं?'

महाराणाने कहा—'बेटी! हमारे यहाँ एक अतिथि आ गये हैं। आज ऐसा भी दिन आ गया कि चित्तौड़के राणाके यहाँसे अतिथि भूखा चला जाय।'

चम्पाने कहा—'पिताजी! आप चिन्ता न करें! हमारे यहाँसे अतिथि भूखा नहीं जायगा। आपने मुझे कल जो दो रोटियाँ दी थीं, वे मैंने बचा रखी हैं। मुझे भूख नहीं है। मैंने रखी तो छोटे भाईके लिये थी, पर वह सो गया है। आप उस अतिथिको दे दीजिये।'

पत्थरके नीचे दबाकर रखी घासकी दो रोटियाँ पत्थर हटाकर चम्पा ले आयी। थोड़ी-सी चटनीके साथ वे रोटियाँ अतिथिको दे दी गयीं। अतिथि रोटियाँ खाकर चला गया।

लेकिन महाराणासे अपने बच्चोंका कष्ट नहीं देखा गया। उस दिन उन्होंने अकबरकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिख दिया।

ग्यारह वर्षकी सुकुमार बालिका चम्पा दो-चार दिनपर तो खानेको घासकी रोटी पाती थी और उसे भी बचाकर रख दिया करती थी। अपने भागकी रोटी वह अपने छोटे भाईको थोड़ी-थोड़ी करके खिला देती थी। लेकिन इस प्रकार भूखके मारे वह सूख गयी थी। उस दिन अतिथिको रोटियाँ देनेके बाद मूर्च्छित ही हो गयी। महाराणा प्रतापने उसे गोदमें उठाकर रोते-रोते कहा--'मेरी बेटी! अब मैं तुझे और दुःख नहीं दूँगा। मैंने अकबरको पत्र लिख दिया है।'

चम्पा मूर्च्छामेंसे चौंक पड़ी। वह कहने लगी--'पिता-जी! आप यह क्या कहते हैं? हमें मरनेसे बचानेके लिये आप अकबरके दास बनेंगे? पिताजी! हम सब क्या कभी मरेंगे नहीं? नहीं पिताजी! देशको नीचा मत दिखाइये! देश और जातिकी गौरव-रक्षाके लिये लाखों लोगोंका मर जाना भी उत्तम ही है। पिताजी! आपको मेरी शपथ है, आप अकबरकी अधीनता कभी न मानें?'

बेचारी चम्पा बोलते-बोलते महाराणाकी गोदमें ही सदाको चुप हो गयी। लोग कहते हैं कि अकबरके दरबारमें महाराणाका पत्र देखकर पृथ्वीराजजीने महाराणाको पत्र लिखा और उसे पढ़कर फिर महाराणाने अकबरके अधीन

होनेका विचार छोड़ दिया। लेकिन सच बात तो यह है कि

बालिका चम्पाने अपने बलिदानसे ही महाराणाका विचार बदल दिया था और हिंदूकुलके गौरवकी रक्षा कर ली थी।

[illegible]

...ुन्दर पाल...

एक कहावत है—यथा राजा तथा प्रजा। औरंगजेब बादशाह तो हिंदुओंपर अन्याय-अत्याचार करता ही था, उसके नीचेके मुसल्मान अधिकारी उससे भी अधिक अत्याचार करते थे। उन दिनों एक-एक जिलेके अधिकारी भी जब जिलेमें घूमने निकलते थे, तब प्रजामें हाहाकार मच जाता था। लोग अपने घरोंके दरवाजे बंद कर लेते थे।

ये अधिकारी हिंदू-प्रजाको लूटते थे, उनकी सुन्दरी कन्याएँ छीन ले जाते थे और मन्दिरोंको तोड़ दिया करते थे।

बिहार प्रान्तके एक जिलेका शासक मिर्जा अपने सिपाहियोंके साथ नावमें बैठकर गङ्गाजीमें घूमने निकला था। जब उसकी नाव एक गाँवके सामने पहुँची तो उसने देखा कि किनारे घाटपर कुछ लड़कियाँ स्नान कर रही हैं। उनमें एक लड़की बहुत ही सुन्दरी थी। मिर्जाने नाव रुकवा दी। मुसल्मान सैनिकोंको देखकर सब लड़कियाँ डरके मारे झटपट वहाँसे अपने-अपने घर चली गयीं।

मिर्जाने नाव किनारे लगा दी। आस-पास पता लगानेसे यह उसे मालूम हो गया कि वह नहानेवाली सुन्दर लड़की उसी गाँवके ठाकुर होरिलसिंहकी बहन है और उसका नाम भगवती है। मिर्जाने होरिलसिंहको बुलवाया और उनसे बोला—'मैं आपकी बहिनको अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ। आपको इसके बदलेमें पाँच हजार अशर्फियाँ और जागीर दूँगा।'

ठाकुर होरिलसिंहकी आँखें मिर्जाकी बात सुनते ही लाल हो गयीं। वे कड़ककर बोले—'बस, चुप रह! ऐसी बात तूने फिर कही तो तेरा सिर काट लूँगा।'

मिर्जा डरके मारे पीछे हट गया, लेकिन उसके इशारेसे उसके आदमी होरिलसिंहपर टूट पड़े। उन लोगोंने होरिलसिंहको पकड़कर उनके हाथ-पैर बाँध दिये और नावके

भीतर डाल दिया। यह खबर होरिलसिंहके घर पहुँची तो उनकी स्त्री रोने-पीटने लगीं। वे क्रोधके मारे भगवतीको बुरा-भला कहने लगीं कि वह घाटपर नहाने क्यों गयी थी।

भगवतीने अपनी भाभीसे कहा—'तुम रोओ मत! मैं भैयाको अभी घर भेज दूँगी।' इतना कहकर वह घाटपर आ गयी! मिर्जा अपने आदमियोंको उसे पकड़ लानेके लिये गाँवमें जानेको कह रहा था, इतनेमें ही भगवती वहाँ पहुँच गयी। उसने मिर्जासे कहा—'आपने इतना बखेड़ा क्यों किया। मैं आपकी बेगम बनूँ, यह तो मेरा सौभाग्य ही है। मेरे भाईको छोड़ दीजिये।'

मिर्जाको आशा नहीं थी कि भगवती इतनी सरलतासे मिलेगी। उसने होरिलसिंहको छोड़ दिया। वे कुछ नहीं समझ सके कि बात क्या है। भगवतीने कहा—'मुझे नावपर डर लगता है। मैं पालकीसे चलूँगी।'

मिर्जाने एक बहुत सुन्दर पालकी मँगवायी। भगवती पालकीमें बैठकर चली। जब पालकी एक तालाबके पास पहुँची तो भगवतीने कहा—'मुझे प्यास लगी है। यह तालाब मेरे पिताका बनवाया है! अब मैं अन्तिम बार इस तालाबका पानी अपने हाथोंसे पीना चाहती हूँ।'

पालकी रुक गयी। भगवती अकेली तालाबपर गयी। तालाबपर एक छोटा-सा देवीका मन्दिर था। भगवतीने

देवीको प्रणाम किया और वह तालाबमें कूद पड़ी। बहुत देर होनेपर मिर्जा वहाँ आया, लेकिन अब वहाँ धरा क्या था। मिर्जाने तालाबमें जाल डलवाया, लेकिन भगवतीका मृत शरीर भी उसके जालमें नहीं आया।
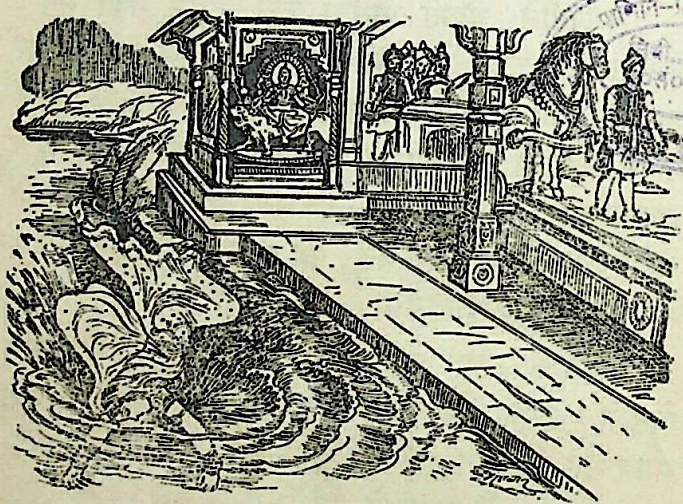
होरिलसिंहने जब यह बात सुनी तो वे भी वहाँ दौड़े आये। उन्होंने जैसे उस तालाबमें जाल डलवाया, वैसे ही भगवतीका शरीर उनके जालमें आ गया। उस तालाबके किनारे ही अपनी उस पवित्र बहिनका देह उन्होंने चितापर रखा, जिसने प्राण देकर अपने धर्म और कुलकी लाज बचा ली थी।

मानवा

सूरतमें उन दिनों नवाबी शासन था ! यह अबसे लगभग दो सौ वर्ष पहलेकी बात है । नवाबने सुना कि सूरतके नगरसेठके पास बहुत अधिक धन है तो वह बिना कोई सूचना दिये एक दिन उनके घर पहुँच गया । उन दिनों मुसल्मान नवाबोंके लिये यह एक साधारण बात थी । किसी धनी प्रजाके घर वे चले जाते और फिर कोई-न-कोई बहाना बनाकर उससे बहुत-सा धन ऐंठ लिया करते थे ।

नगरसेठने नवाबका भली प्रकार स्वागत-सत्कार किया। नगरसेठकी पुत्री मानबाने सुना कि यहाँके नवाब अपने घर आये हैं तो वह भोली बालिका कुतूहलवश वहाँ आ गयी। मानबा बहुत ही सुन्दर थी। नवाबने उसे देखा तो एकटक देखता ही रह गया। इस प्रकार नवाबको अपनी ओर घूर-घूरकर देखते देखकर मानबा घरके भीतर भाग गयी।

नवाबने वहाँ तो नगरसेठसे केवल लड़कीका नाम ही पूछा, लेकिन जब लौटकर अपने महल पहुँचा तो उसने सिपाही भेजकर नगरसेठको अपने यहाँ बुलवाया और उनके आनेपर बोला—'आपकी लड़कीको मैं अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ! आप मेरी बात मान लेंगे तो दरबारमें आपको बड़ा पद मिलेगा। यदि आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो आपका सब धन लूट लिया जायगा; आपको कैदखानेमें डाल दिया जायगा और फिर आपकी लड़कीको तो मैं पकड़कर मँगवा ही लूँगा।'

नगरसेठ बिचारे क्या करते। नवाब कह रहा था—'मेरी बात माने बिना अब तुम यहाँसे बाहर नहीं जा सकते।' वह सोचनेके लिये दो घंटेका समय भी नहीं देना चाहता था। विवश होकर उन्हें नवाबको अपनी पुत्री देना स्वीकार करना पड़ा।

सेठजी घर पहुँचे और साथ ही नवाबने मानबाको लेनेके लिये पालकी भेज दी। मानबा रो रही थी, उसकी माता रो रही थी, पिता रो रहे थे; लेकिन कोई उपाय नहीं था। उसे पालकीमें बैठना पड़ा। नवाबके महलमें शहनाई बज रही थी। जब पालकी महलके दरवाजेके सामने पहुँची तो बहुत-सी दासियाँ मानबाका स्वागत करने महलके दरवाजेके बाहर आयीं।

नवाबका महल बहुत ऊँचाईपर था। मानबाकी पालकी-को सीढ़ियोंके नीचे लाकर रखा गया। मानबा पालकीसे निकली और सीढ़ियोंपर चढ़ने लगी। उसके दोनों ओर बाँदियाँ चल रही थीं। मानबा सीढ़ियाँ चढ़ रही थी और अपने धर्मकी रक्षाका उपाय सोच रही थी। ऊपर नवाब उसका स्वागत करने बड़ी उत्सुकतासे खड़ा था।

मानबा सीढ़ियाँ चढ़ती गयी, चढ़ती गयी और ऊपर पहुँचकर एकदम लौट पड़ी। घूमकर उसने अपने शरीरको सीढ़ियोंपर फेंक दिया। उसका देह लुढ़कता-पुढ़कता तेजीसे नीचे चल पड़ा। शहनाई बंद हो गयी। बाँदियाँ भौंचकी रह गयीं। नवाब पागलकी भाँति सीढ़ियोंपरसे दौड़ता हुआ उतरने लगा मानबाको पकड़नेके लिये।

जब मानबाका शरीर पृथ्वीपर पहुँचा, मानबाकी आत्मा उससे पहले ही स्वर्ग चली गयी थी। नवाब तनिक ही पीछे

सीढ़ियोंपरसे दौड़ता वहाँ आ गया, लेकिन अब उसकी भी

हिम्मत नहीं थी कि उस पवित्र बालिकाकी देहको चितापर जानेसे रोक देता।

वीर बाला पन्ना

पन्नाका जन्म भोपाल-राज्यमें एक गरीब कृषक क्षत्रियके घर हुआ था। जब पन्ना केवल ढाई वर्षकी थी, उसके माता-पिताकी मृत्यु हो गयी। सोलह वर्षके भाई जोरावरसिंहने अपनी छोटी बहिनका पालन-पोषण किया। जोरावरसिंह बालक होनेपर भी वीर पुरुष था। उसने अपनी बहिनको बचपनसे ही भाला-तलवार आदि चलाने तथा घुड़सवारीकी

शिक्षा देनी प्रारम्भ की। पन्नाने मन लगाकर युद्ध-विद्या सीखी और वह कुशल योद्धा हो गयी। घरके प्रबन्धमें भी वह बड़ी चतुर थी।

धीरे-धीरे पिताका धन समाप्त हो गया। जोरावरसिंहपर बहुत-सा कर्ज हो गया। जिस महाजनका कर्ज था, उसने अनेक बार उलाहने दिये, खरी-खोटी सुनायीं और अन्तमें भोपाल-दरबारमें नालिश कर दी। कर्ज तो था ही, राज्यने जोरावरसिंहको कैद कर लिया। अब बेचारी पन्ना अकेली रह गयी। भाईके कैद हो जानेका उसे बहुत अधिक दुःख था। उसने भाईको छुड़ानेका निश्चय किया। अब उसने स्त्रीका वेश छोड़ दिया और एक राजपूत सैनिकका वेश धारण करके वह ग्वालियर पहुँची। उस समय ग्वालियर-नरेश थे महाराज दौलतरावजी सेंधिया। पन्नाने पन्नसिंह नाम बताकर सेनामें नौकरी पानेकी प्रार्थना की। निशाना लगाना, घुड़सवारी, भाला चलाना आदि कार्योंमें उसकी परीक्षा ली गयी और उनमें वह सफल रही। उसे सेनामें नौकरी मिल गयी।

उन दिनों सेंधिया और अंग्रेज-सरकारमें युद्ध छिड़ा हुआ था। तीन वर्षतक यह युद्ध चलता रहा। पन्नाने इस युद्धमें इतनी वीरता दिखायी कि वह साधारण सैनिकसे हवलदार बना दी गयी। उसकी जाँघ तथा भुजामें कई बार गोलियाँ

लगीं, किंतु सदा वह स्थिर रही। शत्रुओंको उसके सामनेसे

भागना ही पड़ता था। वह अपनेको सावधानीसे छिपाये रखती थी। स्नानादिके लिये सबसे पृथक् चली जाती थी।

उसे एक ही चिन्ता थी--अपने भाईको कारागारसे छुड़ानेकी। उसे जो वेतन मिलता था, उसमेंसे बहुत थोड़ा खर्च करती अपने लिये, शेष बचाकर रखती जाती थी।

कुछ लोगोंको संदेह हुआ कि यह बिना मूँछोंका हवलदार उनके साथ कभी स्नानादि क्यों नहीं करता। क्यों वह सदा कपड़े पहने रहता है। एक सैनिकने छिपकर पन्नाका पीछा किया और उसे पता लग गया कि वह स्त्री है। जब यह समाचार सेंधिया-दरबारमें पहुँचा, तब राजाने बुलाकर पन्नासे पुरुषवेष धारण करनेका कारण पूछा। पन्ना रो पड़ी, उसने अपने भाईके बंदी होनेकी बात बतायी। महाराज सेंधिया उसकी वीरता तथा भ्रातृभक्तिसे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सरकारी खजानेसे कर्जका धन भोपाल भिजवा दिया और पत्र लिख दिया कि जोरावरसिंहको कैदसे छोड़कर तुरंत ग्वालियर भेज दिया जाय।

जोरावरसिंह छूट गये। ग्वालियर आकर अपनी बहिनसे मिलकर वे बहुत प्रसन्न हुए। महाराज सेंधियाने जोरावरसिंहको सेनामें एक अच्छा पद दे दिया और पन्नाका विवाह एक सेनापतिके साथ करवा दिया।